Hindi

आस–पड़ोस में बिखरे है सच्चाईयों के सूत्र

अपने शहर की दौड़ती–भागती सड़क पर, जहां जिंदगी का हर क्षण दौड़ता–भागता रहता है, एक ट्रक के पीछे मैंने एक स्लोगन देखा–दम है तो क्रॉस कर, वर्ना बर्दाश्त कर। स्लोगन पढ़कर मन जैसे इस पर विचार करने को विवश हो गया। स्लोगन कर सीधा–सादा अर्थ यही था कि ट्रक वाला अपने पीछे अपने वालों से स्पष्ट शब्दों में यही कह रहा था कि यदि तुममे ताकत है, तो मुझे ओवरटेक कर लो, नहीं तो चुपचाप मेरे पीछे–पीछे चलते रहो। खाली–पीली हॉर्न बजाकर मेरी और खुद की शांति भंग मत करो। तुम भी दुखी मत हो और मुझे भी चैन से चलने दो। यानी तुम अपने में खुश रहो और मुझे भी अपनी दुनिया में खुश रहने दो।

ईमानदारी से यदि इस स्लोगन की तह में जाएं तो ट्रक के पीदे लिखा गया यह सूत्र वाक्य हम सभी का जीवन सूत्र है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसे लागू किया जा सकता है। यदि हममें हिम्मत है, तो लड़ लेना चाहिए और यदि नहीं है तो जो स्थिति हो, उसे स्वीकार कर लेना चाहिए। दोनों में से कुछ भी किए बगैर बेवजह बक–बक, अंट–शंट करते रहने का क्या मतलब ? इसके बाद भी पूरी दुनिया ऐसे ही शोर से गूंज रही है।

पड़ोसी के पास एलसीडी टीवी है, तो इसका शोर दूसरे घर में चल रहा है कि हमें भी अपने घर में एलसीडी टीवी ही चाहिए। ऐसी स्थिति में ऊपर लिखा सूत्र वाक्य कार्य करता है। यदि दम है तो एलसीडी टीवी ले आइए, नहीं तो पड़ोसी की समृद्धि को बर्दाश्त करों। सभी को जीवन में सफल होना है, पर सभी आदमी हर तरह से सफल नहीं हो सकते। इसीलिए दम है तो सफल होकर दिखाओ, नहीं तो वर्तमान परिस्थितियों से समझौता कर लो।

यही बात अपने कार्यस्थल में भी लागू होती है। क्या आपको अपना कार्यस्थल नर्क लगता है ? तो इसे स्वर्ग में बदलने के लिए प्रयास करो। क्या कहा ? स्वर्ग में बदल पाना संभव नहीं है ? तो नौकरी बदल लो। नौकरी बदलना भी संभव नहीं है ? तो फिर चुपचाप बैठ जाओ, जो स्थिति है, उसे स्वीकार कर लो और खुश होकर जीना सीख लो। रोज–रोज अपने तनाव की बातें कर स्वयं को और घरवालों को परेशान मत करो। वे सारी समस्यांए जो आपको परेशान तो करती है, पर जिनका समाधान आपके पास नहीं है, उन्हे समस्या मानने से ही इंकार कर दे। यही जीवन जीने का मूल मंत्र है।

दफ्तर के तनावपूर्ण माहौल की बात करना, असंतुष्ट वाहन चालकों को द्वारा बिना वजह हार्न पर हार्न बजाना, बाजार से निकलते हुए लोगों का बीच रास्ते पर खड़ा हो जाना, राह चलत लोगों का बिना वजह जोर–जोर से बोलना रोज की बात है। इन सभी लोगों का उद्देश्य केवल यही होता है कि लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करें और कुछ पल के लिए स्वयं को महत्वपूर्ण साबित करें। लेकिन उनका यह निरर्थक उद्देश्य हमारे जीवन में विषमताएं पैदा करे तो इसकी ओर ध्यान ही नहीं देना चाहिए।

एक सामान्य वाक्य भी हमारी जिंदगी बदल सकता है। हमारे भीतर उत्साह और उमंग भर सकता है। हमें सुख और संतोष के साथ जीवन जीना सिखा सकता है। बशर्ते कि आप उस वाक्य की सच्चाई को अपने जीवन में उतार लें। सो जब कभी इसी तरह का कोई सूत्र वाक्य देखें, तो उसके अर्थ को समझने का प्रयास करें और उसकी सच्चाई को स्वीकार करें। तब तक इसी वाक्य को जीवन का मूल मंत्र बनांए – दम है तो क्रॉस कर, वरना बर्दाश्त कर।

एक सामान्य सूत्र वाक्य जीवन की सच्चाई के कितने करीब है।

1. उपरोक्त गद्यांश का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
2. एक सामान्य सा वाक्य किस प्रकार हमारी जिंदगी में परिवर्तन ला सकता है, गद्यांश के आधार पर लिखिए।
3. उपरोक्त गद्यांश में अंग्रेजी व उर्दू भाषा के शब्दों का भी समावेश किया गया है।
   जैसे – क्रॉस, टी.वी. अंग्रेजी भाषा के शब्द है व बर्दाश्त व बेवजह उर्दू भाषा के इसी प्रकार गद्यांश में से उर्दू, अंग्रेजी भाषा के शब्दों को खोजकर चार्ट बनाइये।

2. निम्नलिखित रचना एक प्रसिद्ध व्यंग्यकार के द्वारा की गई है, इस रचना को कंठस्थ कीजिए व उसके रचनाकार का नाम बताइये :

मेहनत ने पहना दिया महाशतक का ताज

सैंविंटी थ्री में सुनो, एप्रिल ट्वैंटी फोर,
जन्मा तेंडुलकर प्रवर, आज हर्ष हर ओर।
खिलाड़ी है बचपन से,
प्यार पाया जन–जन से।

सबसे छोटी आयु थी, साढ़े सोलह साल,
अपने पहले टेस्ट में, दिखला दिया कमाल।
खेल खेली लासानी,
हुई सबको हैरानी।

आता है जब क्रीज पर भ जाता उत्साह,
चौके–छक्के देखकर, दर्शक कहते वाह।
वाह रे सचिन हमारे,
क्रिकेट के राजदुलारे।

मुड़कर देखा ही नहीं, खेला धूंआधार,
जनता ने भी प्रेम को, रक्खा नहीं उधार।
क्रिकेट के ही उद्धारक,
शत्रुओं के संहारक।

सचिन हमारे देश का, प्लेयर है कंपलीट,
बल्ला हो या बॉल हो, करता ढ़ंग से ट्रीट।
नेत्र उसके दुरूस्त है,
फील्ड में सदा चुस्त हैं।

असफलताएं हर जगह, करती है नुकसान,
रखना इतना ध्यान बस, बढ़े खूब सम्मान।
क्रिकेट गर्वित तुमसे हो,
रत्न तुम भारत के हो।

गावस्कर, राहुल, कपिल, खेली ग्रेट क्रिकेट,
लेकिन बढ़ती उम्र ने, ज्यों ही लिया लपेट।
सुविधा जो भी पाई,
दूसरों को सिखलाई।

तेंडुलकर का नाम है, सबसे ऊंचा आज,
मेहनत ने पहना दिया, महाशतक का ताज।
युवाओ आगे आओ,
स्वयं को सचिन बनाओ।

3. आजकल फूलों की होली खेली जाती है। पर्यावरणविद् कलाकार, सज्जन लोग फूलों की होली को ही महत्व देते है और होली पर भी प्राकृतिक रंगो से ही होली खेलना व एक दूसरे को प्रकृति के रंग में रंगकर सराबोर करना पसंद करते है।

पुराने समय के लोग पेड़–पौधों, फूल, पत्रों से प्राकृतिक रंग बनाकर उससे होली खेलते थे। लेकिन आजकल समाज में लोग कृत्रिम रंग एवं गुलाल से होली खेलते है। जिसके कारण त्वचा संबंधित रोग भी हो रहे है कृत्रिम रंग से आंखों के खराब होने का भी खतरा होता है।

उपरोक्त गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. फूलों की होली हमारे लिए किस प्रकार आनन्ददायक है ?
2. पुराने समय में लोग किस प्रकार के रंग बनाकर उससे होली खेलते थे ?
3. कुत्रिम रंग से हमारे शरीर को क्या नुकसान हो रहा है ?
4. होली, फूल, प्रकृति, प्रमुख, महत्व आदि शब्दों का प्रयोग कर दो–दो वाक्य लिखिए।
5. निम्न शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :
   1. प्राकृतिक
   2. पुराने
   3. पसंद
   4. संबंधित

संस्कृत

निम्नलिखित श्लोंको को अर्थ सहित याद करके लिखिए :

1. उदये सविता रक्तः रक्तश्च अस्तसमये तथा।
सम्पतौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।।

अर्थ : (जिस प्रकार) सूर्य उगते समय लाल होता है और अस्त होते समय भी लाल होता है। उसी प्रकार महान पुरूष सुख और दुख में एक समान रहते है।

2. दिवा पश्यति नोलूकः काकः नक्त न पश्यति।
विद्याहीनः मूढः तु, दिवा नक्तं न पश्यति।।

अर्थ : उल्लू को दिन में दिखाई नहीं देता, कौऐ को रात में दिखाई नहीं देता। विद्या से हीन मूर्ख व्यक्ति को दिन और रात में दिखाई नहीं देता।

3. तक्षकस्य विषं दन्ते, मक्षिकायाः च मस्तके।
वृश्चिकस्य विषं पुच्छे, सर्वांगे दुर्जनस्य तत्।।

अर्थ : तक्षक सांप के दांत में विष होता है, मक्खी के मस्तक पर, बिच्छू की पूंछ में विष होता है। लेकिन दुष्ट के पूरे शरीर में विष होता है (इसलिए दुष्ट व्यक्तियों से बचकर रहना चाहिए)

4. श्रोतुं श्रुतेनैव न कुण्डलेन,
दानेन पार्णिन तु कंकणेन।
विभाति कायः खलु सज्जनानां।
परोपकारेण न तु चन्दनेनं।।

अर्थ : कान सुनने से सुशोभित होते है, कुण्डल पहनने से नहीं। हाथ दान से सुशोभित होते है, कंगन पहनने से नहीं। निश्चय ही सज्जनों का शरीर परोपकार से सुशोभित होता है, चंदन के लेप आदि से नहीं।